भोला

राजेंद्रसिंह बेदी

चित्रांकन
सुजाता खन्ना

राजेंद्रसिंह बेदी

राजेंद्रसिंह बेदी उर्दू भाषा के लेखक थे। परन्तु उनकी मातृभाषा पंजाबी थी। इनकी कहानियों में जो सच्चाई झलकती है वह बहुत कम देखने में आती है। उनकी रचनाओं की संख्या बहुत बड़ी नहीं है, लेकिन उनकी सभी रचनायें अपना प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहतीं।

इन्होंने अपनी कहानियों में नारी को उसकी आत्मा तक जानने और रचने का प्रयास किया है। सन् 1965 में इन्हें अपने उपन्यास 'एक चादर मैली सी' के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

इस कहानी में भी इन्होंने मासूम भोला के प्यार, उसकी माँ के स्नेह एवं दादा के दुलार का बहुत सरलता से बयान किया है जो मन को छू लेता है।

माया, पत्थर के कटोरे में, मक्खन रख रही थी। इससे लगता था कि उसके घर से, कोई आने वाला है ! हाँ, याद आया ! दो दिन बाद माया का भाई, अपनी बेवा बहन से राखी बंधवाने, आने वाला था।

छोटा भोला भी गन्ना चूसते हुए बोला, 'बाबा ! परसों मामूँ जी आयेंगे ना ?'

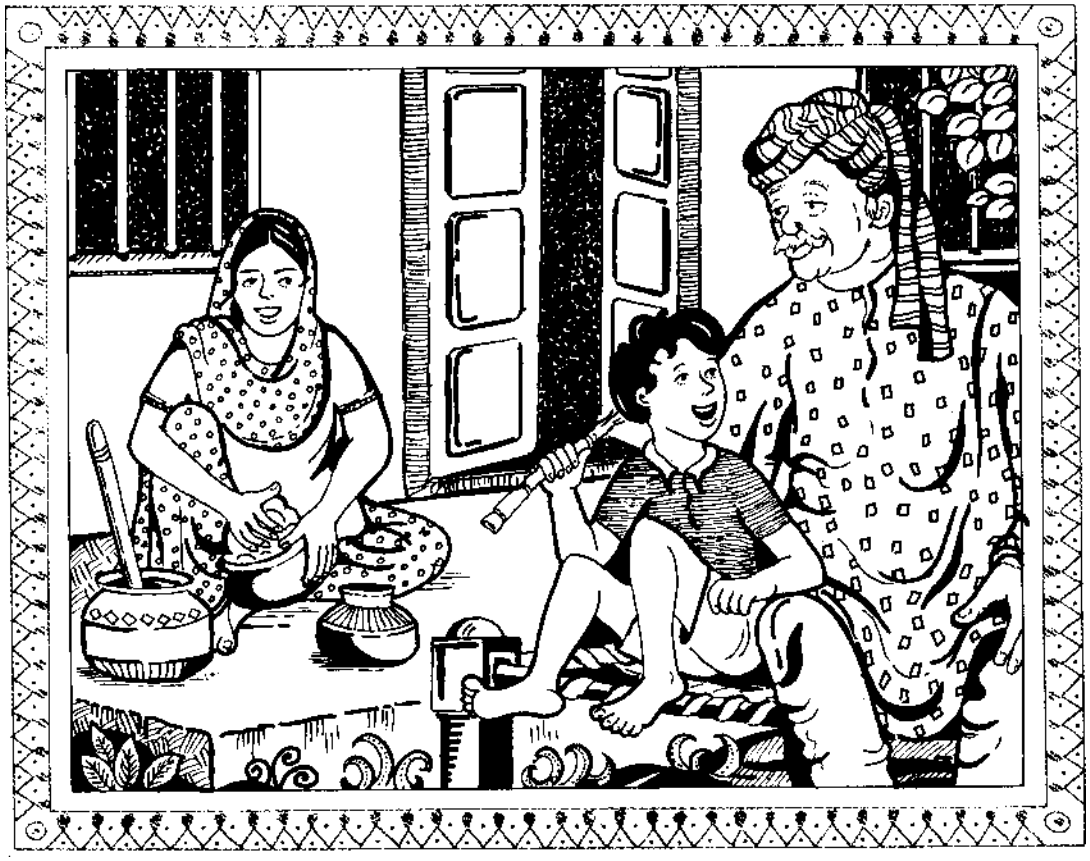

मैंने पोते को गोद में उठा लिया । उसे चूमते हुये मैंने कहा, 'भोले तेरे मामूँ, तेरी माँ के क्या होते हैं ?'

भोला सोच कर बोला, 'मामूँ जी !'

माया, गीता-पाठ छोड़ कर हँसने लगी । मुझे उसका हँसना भला लगा । माया बेवा थी पर मैंने उस पर खाने- पहनने की कोई पाबंदी नहीं लगाई थी । फिर भी वह बहुत सादा रहती ।

पाठ खत्म करके, उसने अपने लाल को बुलाते हुए पूछा, 'भोला, तुम नन्हीं के क्या होते हो ?'

'भाई ।'

'इसी तरह तेरे मामूँ जी, मेरे भाई हैं ।'

भोला समझ नहीं सका । वह उचक कर माँ की गोदी में जा बैठा और गीता सुनने की हठ करने लगा । उसे कहानियों का बहुत शौक था ।

मुझे दोपहर को छः मील दूर, अपने ग्राहकों को हल पहुँचाने थे। मुसीबत का मारा बूढ़ा शरीर। अब बोझ नहीं उठता था। बेटे की मौत ने तो कमर ही तोड़ दी थी। अब तो बस, भोले का ही सहारा था।

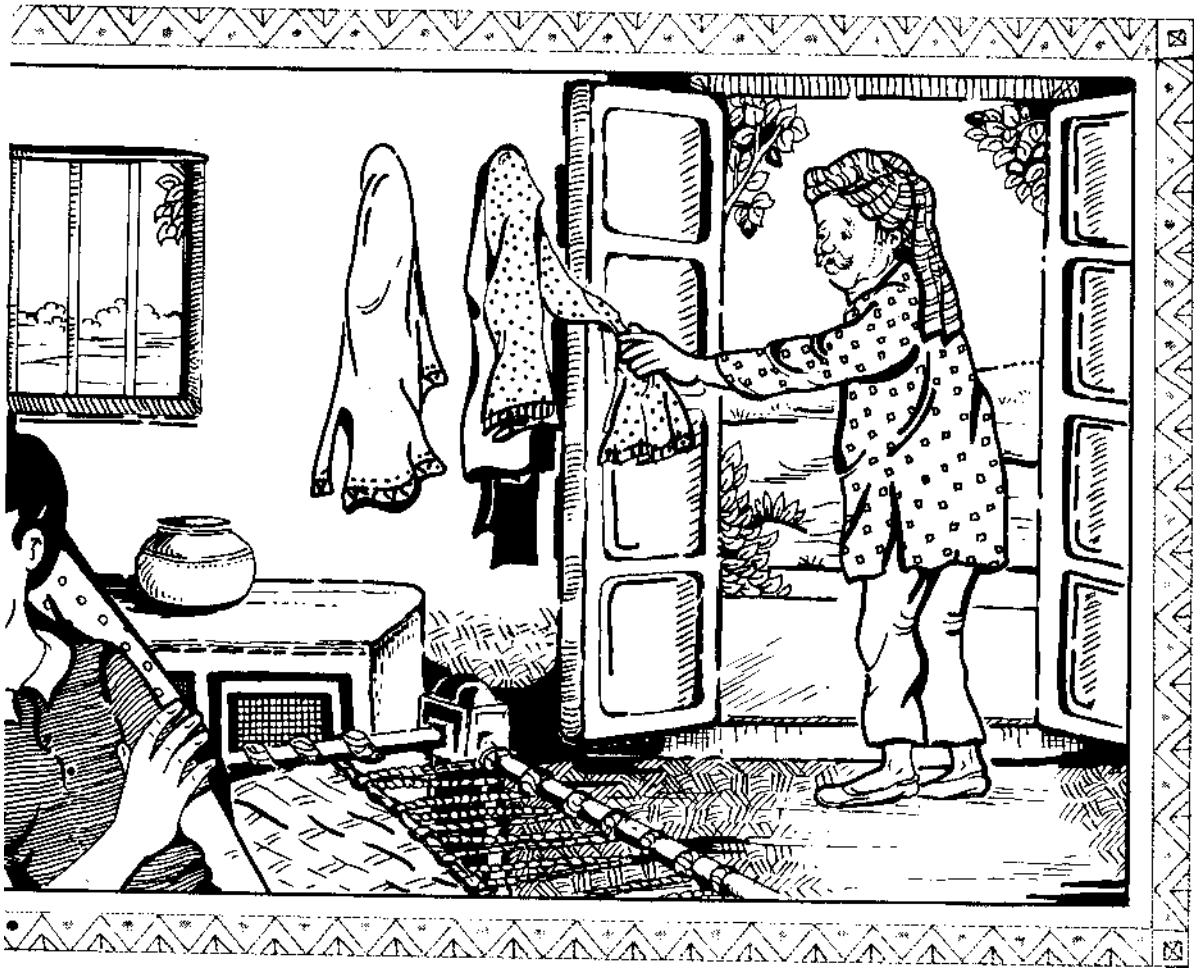

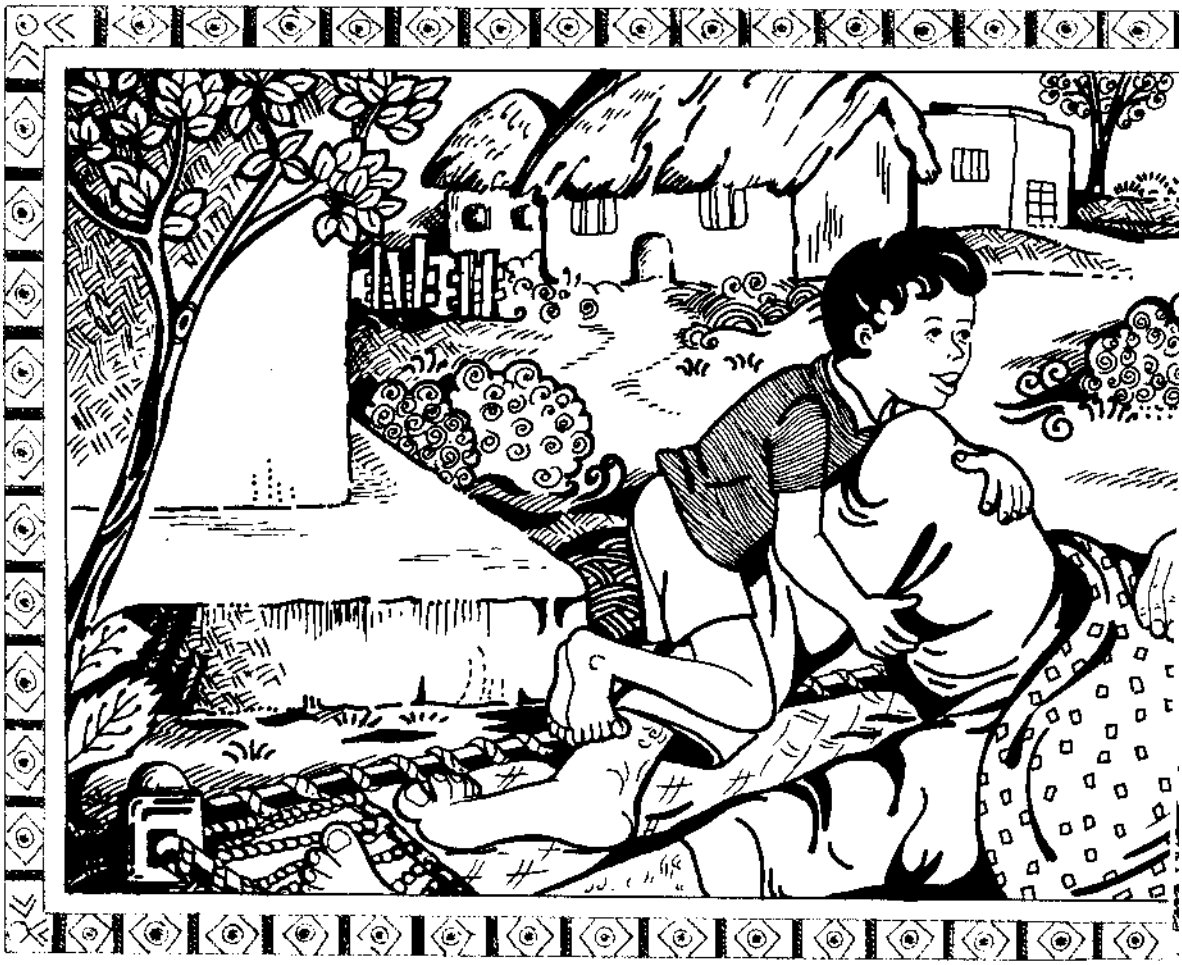

रात को मैं थकान के कारण, लेटते ही ऊँघने लगा । भोला अभी सोया न था, बोला, 'बाबाजी ! मुझे कहानी सुनाइये ना !'

'ना बेटा ! आज थक गया हूँ ! कल दोपहर को सुनाऊंगा !' भोला रूठ गया, 'मैं बाबा का भोला नहीं । माता जी का भोला हूँ ।'

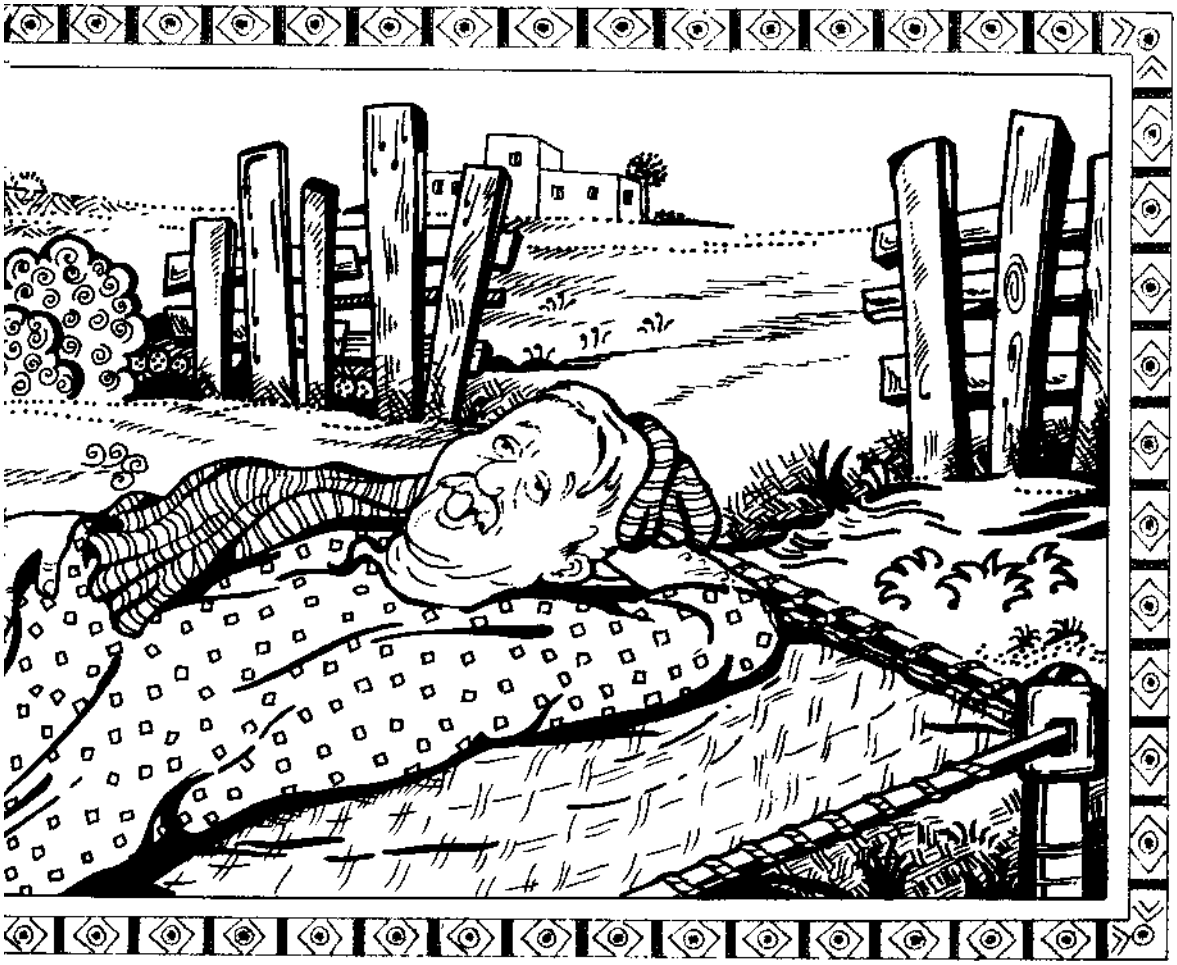

भोला जानता था, मैं ऐसी बातें नहीं सुन सकता। पर हलों को ढोने के कारण, मैं थक गया था। इसलिए मैंने भोला की वह बात भी चुपचाप सुन ली। जल्दी ही मुझे नींद आ गई।

सुबह भी भोला नाराज़ था। शायद इसलिए वह मेरी गोद में नहीं आया।

मैंने भोले को मिठाई के लालच से मना लिया ।

माया ने भाई के लिये अब सेर भर मक्खन जमा कर लिया था । मैं भाई-बहन के प्यार के बारे में सोच ही रहा था कि भोला ने पूछा, 'बाबा ! अपना वादा याद है तुम्हें ?'

'किस बात का बेटा ?'

'तुम्हें आज दोपहर को कहानी सुनानी है !'

भोला ने दोपहर का बहुत इंतज़ार किया होगा। इसलिए उसने समय से पहले मुझे खाना खिलाने की ज़िद की थी।

आख़िरी निवाला तोड़ा ही था कि पटवारी आ गया। ख़ानक़ाह वाले कुँए की ज़मीन नापने के लिए आज ही उसके पास समय था। मैंने भोला को देखा। वह दौड़-दौड़ कर बिस्तर बिछा रहा था।

पटवारी से मैंने कहा, 'मैं अभी आता हूँ ।' यह सुन कर भोला उदास हो गया । माया ने भी यह काम टालने को कहा । पर मैं नहीं माना ।

भोला को मैंने टालना चाहा, 'बेटा ! दिन को कहानी सुनाने से राही रास्ता भूल जाते हैं ।'

भोला ने भरोसा न किया और रोने लगा । मैं कुछ समय निकाल सकता था । सो, लेटते हुए कहा, 'ठीक है, पर कोई राही रास्ता खो बैठे, तो दोष तुम्हारा होगा !'

फिर मैंने सात शहजादों और सात शहजादियों वाली कहानी सुनाई । भोला को वह कहानी अच्छी लगतीं थी जिसके आखिर में शहजादा-शहजादी की शादी हो जाए । मैंने वैसी ही कहानी सुनाई । पर इस बार भोले को खुशी नहीं हुई ।

कहानी सुना कर मैं कुँए की तरफ चल पड़ा। शाम को जब वापिस आया तो भोला अपने मामूँ का बेसब्री से इंतजार कर रहा था।

'बाबा, आज मामूँ जी आयेंगे ! ऐसी मिठाई लायेंगे जो आपने कभी न देखी होगी।'

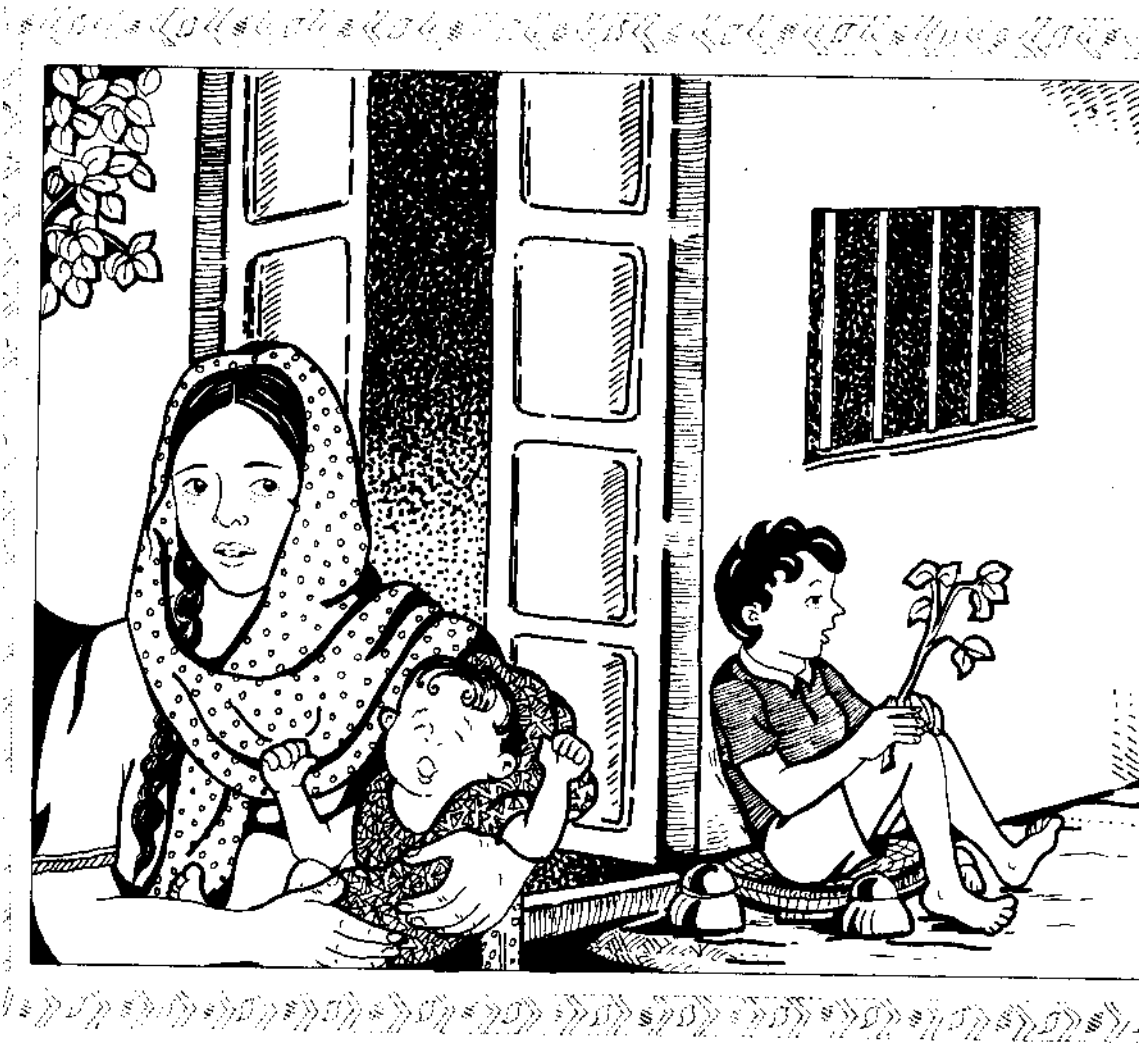

शाम से भोला दरवाज़े पर मामूँ का इंतज़ार करने लगा। अंधेरा हो गया, पर मामूँ न आये। माया भी परेशान होने लगी। मैंने उसे दिलासा दी, 'कोई काम पड़ गया होगा, तभी नहीं आ सका ...'

भोले को मैंने जबरन दरवाज़े से उठाया। वह और भी परेशान था, 'माताजी, मामूँ क्यों नहीं आये ?'

'शायद सुबह आ जायें, भोले !' माया उसे भीतर ले गई। वह अब भी अपनी माँ से पूछ रहा था, 'मेरे मामूँ तुम्हारे क्या होते हैं ?'

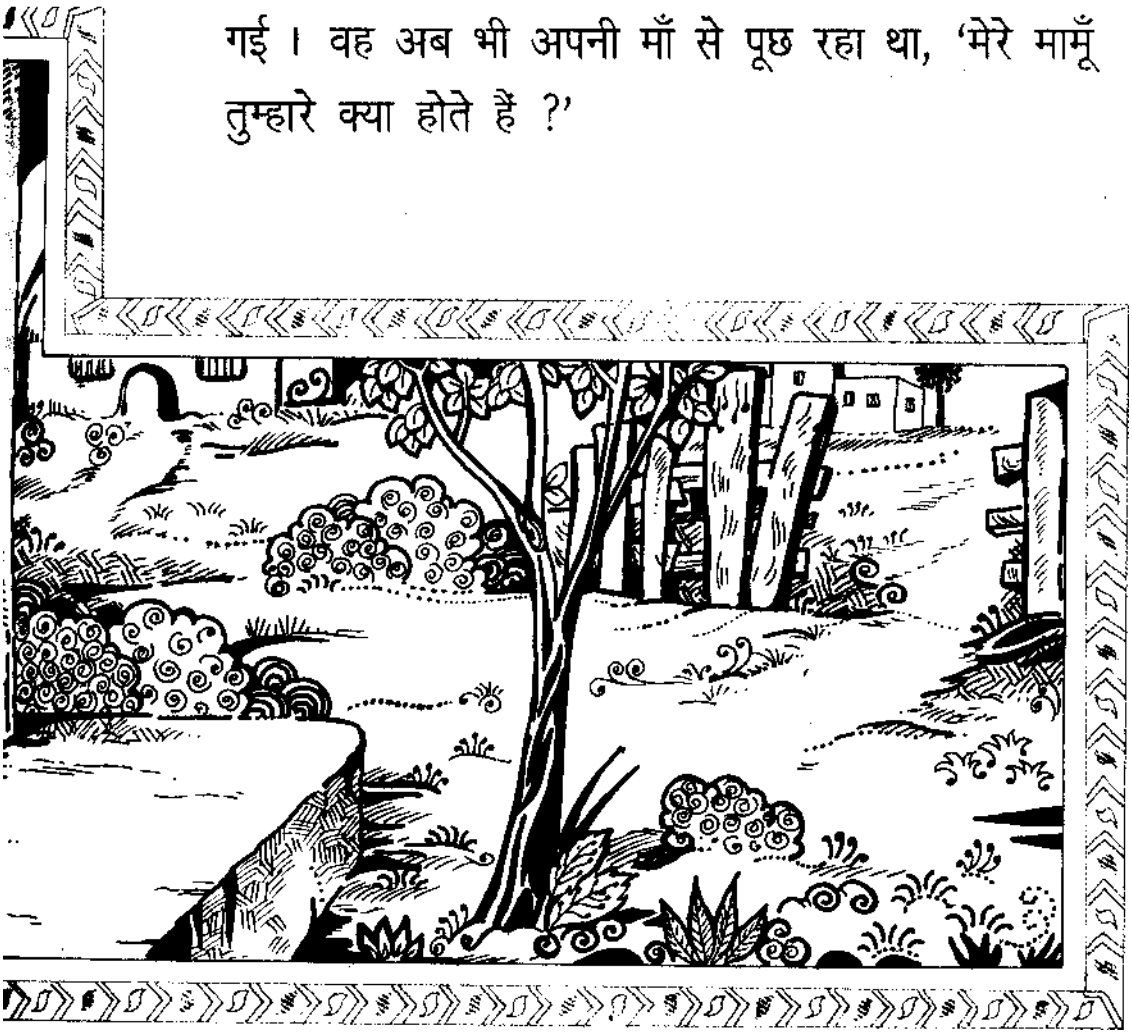

रिश्तों में उलझ कर वह मासूम सो गया । मैं लेटा तो मुझे लगा कि माया का भाई अब नहीं आयेगा ।

माया मेरे लिए दूध लेकर आई तो भोला उठ बैठा, 'मामूँ अभी तक क्यों नहीं आये ?'

'बेटा ! वे सवेरे आ जायेंगे !'

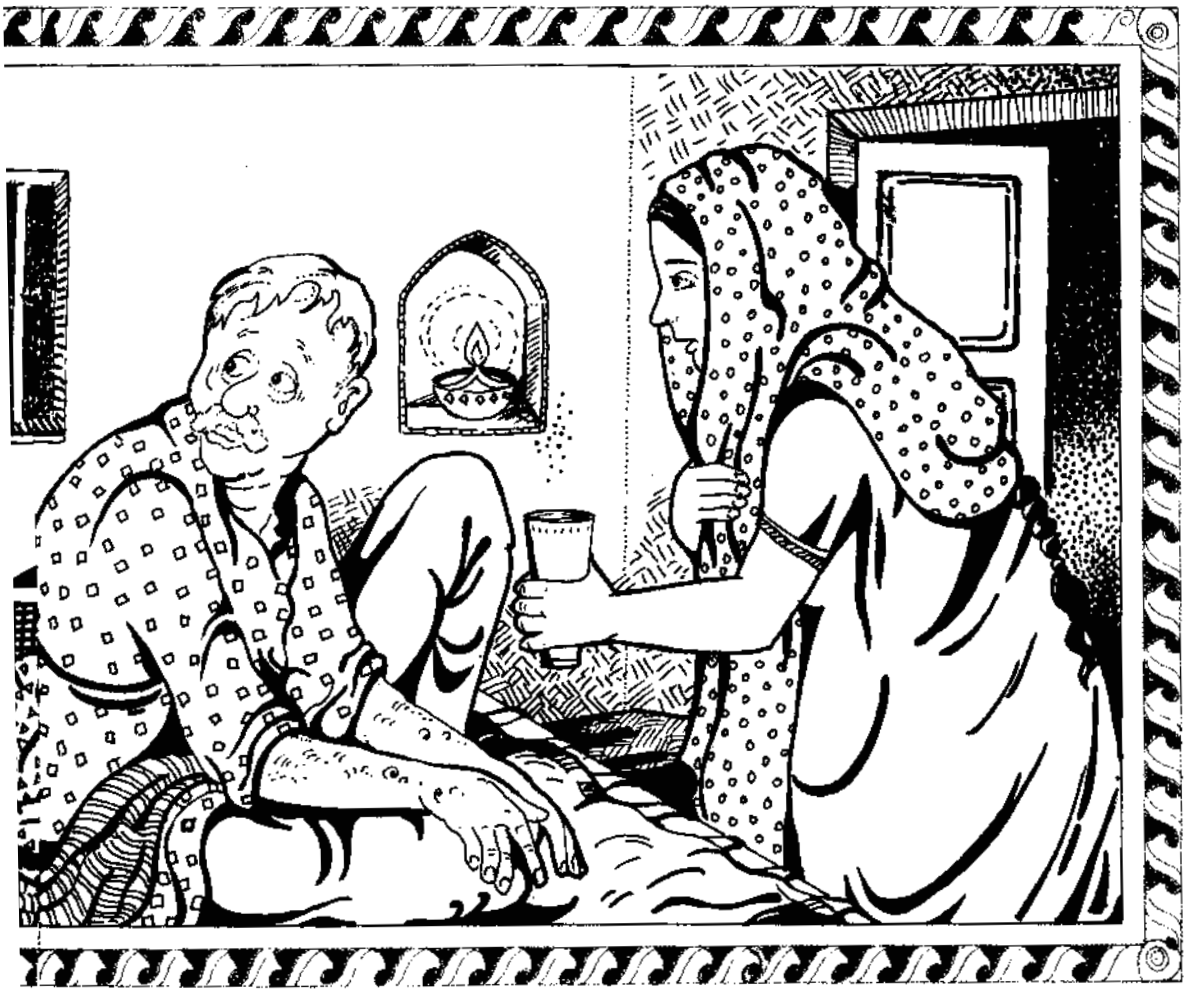

माया भी बेताब थी पर दिन-भर की थकी-हारी, लेटते ही सो गई । मेरी तो बुढ़ापे की कच्ची नींद थी । तिस पर मेले में आये हुये चोरों का डर, जो बच्चों को उठा कर ले जाते थे । इसलिए मैंने भोला को अपने पास लिटा लिया । उसके बाद मैं सो गया ।

जब आँख खुली तो देखा-लालटेन दीवार पर नहीं थी। भोला भी नहीं था। मैं परेशान हो गया। माया को जगाया। घर का कोना-कोना छाना। भोला पता नहीं कहाँ था ?

माया सुहाग लुटने पर इतना न रोई थी जितना अब रो रही थी। पड़ोस की औरतें भी जमा हो गईं। मैं भी रो रहा था।

माया तो बेहोश हो गई। 'हे भगवान ! इससे अच्छा था, मुझे उठा लिया होता !' मैंने सोचा।

तभी माया होश में आ गई। माया को दिलासा देना भी बेकार था।

आधी रात को हमारे पडोसी ने थाने की राह ली। हम सब सुबह होने का इंतज़ार करते रहे।

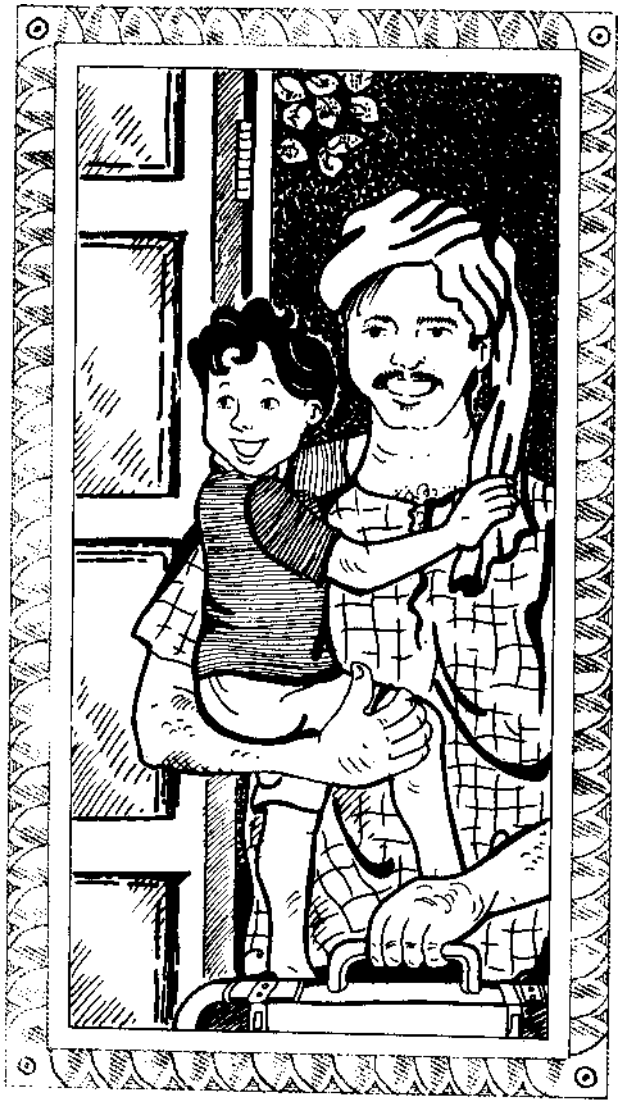

अचानक दरवाजा खोलकर भोला के मामूँ भीतर आये। उनकी गोद में भोला था।

भोला को देख, हमारी साँस में साँस आई। माया ने भोले को गोद में लेकर चूमना शुरू कर दिया।

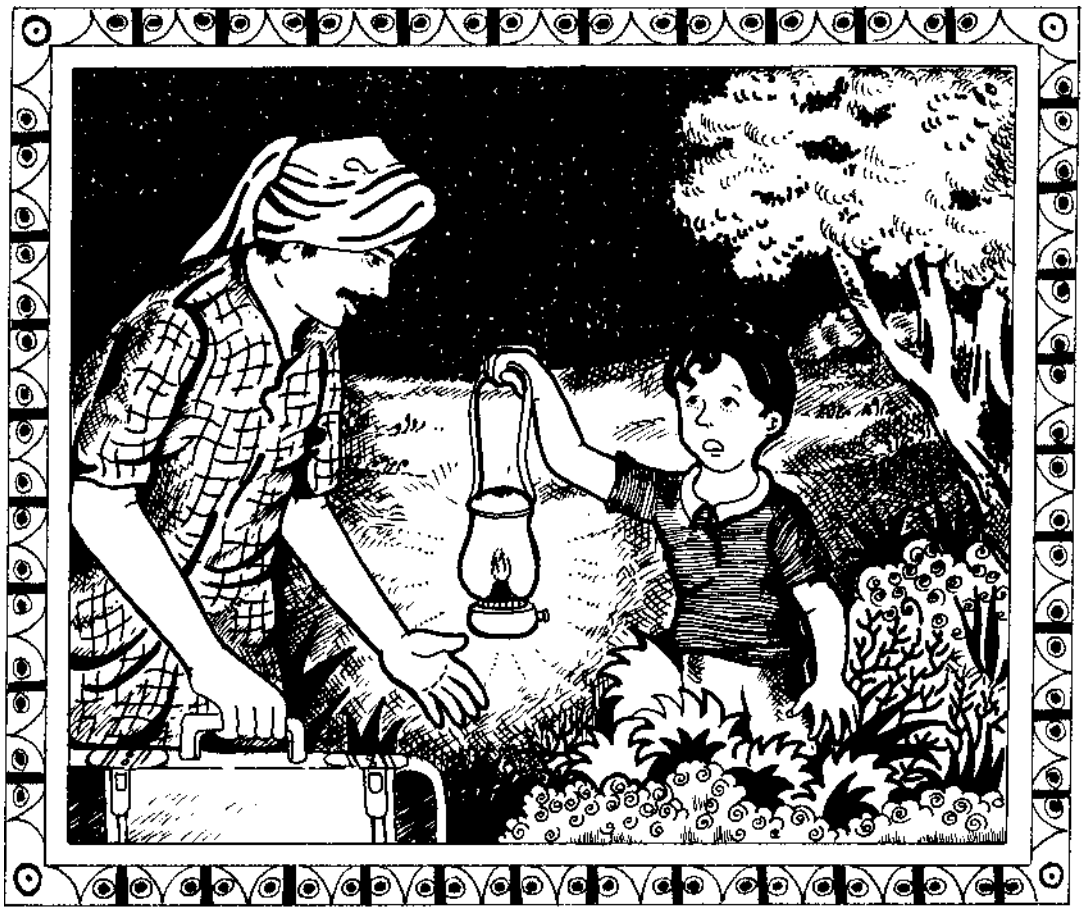

दरअसल भोला के मामूँ को काम में देर हो गई थी। देर से रवाना होने पर अंधेरे में वह रास्ता भूल गये थे। गाँव से आने वाली सड़क पर दूर से रोशनी आती देख कर वो हैरान रह गये। वे रोशनी की ओर बढ़े। पास जाकर देखा तो भोला सड़क के पास लालटेन पकड़े काँटों में उलझा हुआ खड़ा था।

पूछने पर भोला ने बताया, 'बाबाजी ने दोपहर को कहानी सुनाई थी और कहा था कि दिन में कहानी सुनाने से राही रास्ता भूल जाते हैं । मुझे लगा तुम रास्ता भूल गए होगे । बाबा ने कहा था, कोई रास्ता भूल गया तो मेरा दोष होगा ना !'